स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में लालकिले की
प्राचीर से प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी
का राष्ट्र के नाम संदेश ।

× × × × × × × × × ×

स्थान : लाल किला. नई दिल्ली
दिनांक : 15.8.82

बहनों और भाइयो. न सिर्फ दिल्ली के या वो जो मेरे सामने बैठे हैं. लेकिन लाखों-लाखों भारतवासी जो इनसेट के द्वारा इस समारोह को देख रहे हैं और इस खुशी के दिन हमारे संग शामिल हैं और साथ ही मैं अपनी आवाज वहां भी पहुंचाना चाहती हूं जो न रेडियो द्वारा. न इनसेट. लेकिन हृदय के द्वारा पहुंचती है. तो लाखों-लाखों हिन्दुस्तानी भाई और बहन हमारे देश के बाहर रहते हैं ।

आज का दिन हमारी 36वीं स्वतंत्रता दिवस का वर्षगांठ है और हम और आप यहां इस ऐतिहासिक लाल किले पर खड़े हैं । जो स्वतंत्रता की भावना का प्रतीक रहा है । 1858 से ले के और बाद में गांधी जी के नेतृत्व में जो आंदोलन हुए क्रान्तिमय. नेताजी सुभाष बोस ने जो अपनी फौज बनाई और यहां भी भारतवासी थे उनके हृदय में एक ही विचार था. कैसे हम साथ हो के और इस लालकिले पर आज़ाद भारत का झंडा फहरायें । छत्तीस वर्ष पहले जवाहर लाल नेहरू ने पहले दफे वो फहराया यहां पर । उनका संबंध उसके पहले से भी लाल किले से बंधा था जब यहां पर हमारे कैदी बंद थे और उनके बचाव के लिए वो और और हिन्दुस्तान के बड़े लोग आगे बढ़े थे ।

आज का दिन है एक प्रकार से हम कह सकते हैं कि आंसू का दिन है उनके लिए जो करोड़ों की संख्या में जिन्होंने अपनी जानें दीं. चाहे आजादी की लड़ाई में. चाहे आजादी के बाद उस आजादी को बचाने के लिए. उन लाखों के लिए जो घायल हुए. जिनके परिवार बर्बाद हो गये । लेकिन भारत आंसुओं का देश नहीं है । आज का दिन है जब हम गौरव करते हैं कि न हमने आंसुओं से अपनी दृष्टि को धुंधला बनने दिया. न अपने घाव से घबराये. बिना पट्टी बांधे. बिना रुके हर कष्ट का. हर खतरे का सामना करते हुए ये देश आगे बढ़ा है चाहे सीमा की लड़ाई हो. चाहे विदेशी हुकूमत से लड़ाई हो और आज चाहे गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन नाइंसाफी और जुल्म से लड़ाई है । भारत ने हमेशा अपने गम को पिया

....2/-

और हिम्मत से, भारत के इतिहास, भारत की परम्परा पर गौरव करते हुए मजबूती से हमने अपने पैर आगे बढ़ाये हैं । आज कोई कष्ट से हम बचे नहीं हैं, कोई खतरों से हम बचे नहीं हैं । आप में से हरेक जो यहां बैठे हैं और जो हमारे करोड़ों किसान भाई हैं, करोड़ों मजदूर भाई हैं, बहुत से वो जो बेरोजगार हैं, जो हमारी महिलायें हैं या हमारे हरिजन, पिछड़ी जाति के लोग, हमारे आदिवासी भाई और बहन, या जो भी हैं, जहां तक आजादी के फल पूरी तौर से नहीं पहुंच सके, जहां पर उद्योग नहीं पहुंच सके, जहां पर आधुनिकता नहीं पहुंच सकी, लेकिन इस लड़ाई में हम सब संग हैं । आज उन सबकी तरफ हमारा ध्यान है । अगर ये काम पूरे नहीं हो सके तो इस वजह से नहीं कि इच्छा नहीं थी या प्रयास नहीं था, लेकिन इस वजह से ~~कि~~ इतना बड़ा काम कोई जादू से या एक दिन में नहीं हो सकता है । इसलिए कि ऐसे काम कितनी भी इच्छा हो, कितना भी बड़ा प्रयास हो, इसमें समय लगता है और उसकी गति, उसकी रफ्तार कौन तय करता है ? हमारी इच्छा नहीं । लेकिन लोगों का सहयोग । अगर लोग साथ खड़े रहेंगे, अगर लोग वो गुण दिखायेंगे जो उन्होंने आजादी की लड़ाई में दिखाये या हमारे ऊपर हमला होता है तो एक हो के खड़े हो जाते हैं हमारे बहादुर अफसरान और जवानों के पीछे, हमारी सेनाओं के पीछे । अगर वो भावना इस गरीबी की लड़ाई में भी, इस भारत को ऊपर उठाने की लड़ाई में भी वो दिखायें तो हम और तेजी से आगे बढ़ें । हमें दुख होता है कि ये भावना हमेशा नहीं दिखती है । देश से जो सबसे बड़ी कमजोरी थी हमारे ऊपर जब विदेशी राज्य था तो उनकी क्या कोशिश थी ? कि किसी न किसी तरह से धर्म के नाम से, या कोई और कारण हमारे बीच में मतभेद डालें जिसमें जो ये सेना थी शान्तिमय सेना, गांधी जी की सेना, आजादी की, स्वतंत्रता सैनिकों की सेना, ये दुर्बल हो जाये । उनके जाल में हम नहीं फंसे । बीच-बीच में कुछ होता रहा कुछ न कुछ गड़बड़, दंगे भी हुए । लेकिन आमतौर पर हम अपने चुने हुए रास्ते पर आगे बढ़े । जब आगे बढ़ते हैं किसी यात्रा पर तो बहुत से रास्ते दिखलाई पड़ते हैं । कुछ बड़े, कुछ पगडंडी और हर समय हमें चुनना होता है कि किस रास्ते पर अपने पैर आगे बढ़ायेंगे । हमारे जैसा देश जो इतनी गरीबी में था, इतना दबा हुआ था और डरा हुआ भी था एक समय । उसके लिए बहुत से रास्ते सामने नहीं हैं । वास्तव में तो एक ही रास्ता है । वो एकता का रास्ता है जो कौम को, समाज को, देश को मजबूत करे । जो खतरे से ~~नहीं~~ नहीं डरे, जो कष्ट से नहीं डरे । कष्ट आजादी के पहले भी थे और बहुत से आज हमारे सामने लोग बैठे हैं और देश में हैं, जो आजादी के बाद पैदा हुए, जिनको कल्पना भी नहीं है कि किस प्रकार से अपमान होता था और गरीबी का ~~सही~~ सच्ची चित्र क्या है उसका वो सोच भी नहीं

सकते हैं । आज गरीबी देश में है । लेकिन साथ-साथ मध्यम वर्ग मजबूत हुआ है, संख्या में भी और उसकी ताकत भी बढ़ी है ।

आज कुछ बेरोजगारी है लेकिन बहुत से लोगों को रोजगारी के, नौकरी के, आगे बढ़ने के अच्छे मौके मिले हैं और मिल रहे हैं और जितना काम आगे बढ़ेगा, जितना विकास बढ़ेगा, उतने ही वो मौके आगे बढ़ेंगे ।

हमारे देश में जहां हमें हाथ भीख मांगने के लिए लम्बा करना पड़ता था आज हम अपने देश में वो अनाज पैदा कर सकते हैं । लेकिन काफी नहीं है । जनसंख्या भी बढ़ रही है, जमीन की भी ज्यादा जरूरत है, अनाज की भी, शिक्षा की भी, स्वास्थ्य-के प्रबन्ध की और बहुत सी चीजें जिनको पहले हम सोच भी नहीं सकते थे आज वो सब चीजें आवश्यक वस्तु हो गयी हैं, हरेक व्यक्ति के लिए, हरेक परिवार के लिए और हमारी कोशिश है कि ये सब जो भी हमारे पास, थोड़ा भी हो, उसका बंटवारा इस प्रकार से हो कि किसी को, चाहे कष्ट हो, कमी हो, लेकिन बेइंसाफी कम हो । न्याय अधिक से अधिक लोगों को मिले, इस कोशिश में हम आगे बढ़ रहे हैं ।

आज हमारे दुश्मन क्या हैं ? हो सकता है कि बाहरी दुश्मन भी हैं और होंगे । गरीबी तो पुराना दुश्मन हमारा और दूसरे हमारे जैसे देशों का दुश्मन है ही हैं, आर्थिक पिछड़ापन भी दुश्मन है । लेकिन जिस चीज़ ने भारत को पहले कमजोर किया था जिससे हमने आजादी खोई । वो ही आज भी है जो भारत को कमजोर कर सकता है और कर रहा है । वो है जो धर्म के नाम से अनेकता आती है । वो हैं जो भाषा के नाम, प्रान्तीयता के नाम, जातिवाद को ले के आपस में भाई-भाई के बीच में नकली दीवारें खड़ी करते हैं । मैं आपसे पूछती हूं, मेरे भाई, और मेरी बहनो, और प्यारे बच्चो: कौन देश है जो बिना एकता के, बिना कड़ी मेहनत के, आगे बढ़ सका है । हम चाहते हैं हमारी सेनाएं मजबूत हों । किसलिए ? किसी पर हमला करने के लिए नहीं । हम अपनी सीमाओं को बचाने के लिए, अपने देश को सुरक्षित रखने के लिए । हम चाहते हैं कि हमारे यहां उद्योग बढ़े, कृषि का उत्पादन बढ़े जिसमें लोगों को नौकरी मिले जिसमें वो सामान पैदा हो जिससे सबके जीवन-स्तर में कुछ ऊंचाई आये, कुछ आराम और सुख आये । [हम शान्तिमय देश हैं और शान्ति की भावना केवल अपने देश में नहीं, दूर-दूर हम विश्व में चाहते हैं ।] लेकिन यह कब हो सकता है जब ये/घुन की तरह जो अफवाहबाजी फैलती है । अन्याय की आवाज उठती है । हमें मालूम है कि कभी-कभी अन्याय होता है । हमको मालूम है कि कभी-कभी अत्याचार होता है । हमको मालूम है कि कभी-कभी भ्रष्टाचार भी है । लेकिन इनसे लड़ने का क्या तरीका है । क्या कमजोर सरकार इनसे लड़ सकती है । क्या वो सरकार जिस पर स्वयं हर समय हमला हो रहा है, वो गरीबों को सुरक्षित रख सकती है ।

....4/-

अल्पसंख्या के लोगों को बचा सकती है ? क्या वो सरकार इस देश का सारी दुनिया में सिर ऊंचा कर सकती है ? समय आया है. असल में तो कभी गया नहीं था. लेकिन आज पहले से ज्यादा उसकी जरूरत है क्योंकि दुनिया में खतरे बढ़ गये हैं । जिन खतरों का, जिन कष्टों का सामना हम और आप और विशेषकर के जो ज्यादा गरीब, पिछड़े हुए तबके हमारे देश के हैं, जिनका सामना हम कर रहे हैं कम और वेश यही स्थिति सारी दुनिया में है । धनी से धनी और मजबूत से मजबूत देशों में आज बेरोजगारी है, बढ़ती हुई कीमतें हैं । आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है । बहुत से देश जाने का मुझे मौका मिला है और जहां मैं नहीं भी पहुंचती हूं या हमारे दूसरे मंत्रीगण नहीं पहुंचते हैं उनकी भी खबर तो हर समय आती है । हरेक के मन में चिन्ता है । लेकिन इन सब चिन्ताओं के ऊपर एक बहुत बड़ी चिन्ता है कि ये हमारी मनुष्य जाति जिसने इतनी, जिसने आज अपना बढ़ाया, अपनी कला बढ़ायी, ये किधर जा रही है । क्या ये जिंदगी करने जा रही है या इस सुन्दर हमारी इस पृथ्वी को समाप्त करने जा रही है . ये प्रश्न अब अधिक से अधिक लोग सोच रहे हैं और दुनिया की राजधानियों में और दूसरे नगरियों में इसके आंदोलन, इस पर लिखा, इस पर बोला जा रहा है ।

तीन बड़े खतरे हैं । एक तो वो औजार, हथियार, बुरे से बुरे प्रकार के, जो मनुष्य जाति को, उसकी इमारतों को, उसके शहरों को, उसके खेतों को बर्बाद करते हैं. वो हथियार अभी बहुत बड़ी तरह से जमा किये जा रहे हैं इन देशों में । दूसरे जो अमीर और गरीब देशों के बीच में अन्तर बढ़ता जा रहा है । हमारे देश में और गरीब देशों में भी यह अन्तर है । हम किसी से ये छिपाते नहीं हैं । लेकिन हम कम से कम उस कोशिश में लगे हैं कि समाजवाद की तरफ हमारा देश जाये और हमारे समाजवाद के मुख्य माने ही यही हैं कि ये अन्तर कम हों, बराबरी ज्यादा समाज में आये और आजादी के फल घर-घर और हरेक व्यक्ति तक पहुंचे । तीसरा खतरा वो है कि तनाव हैं. चाहे कोयला निकालना हो, चाहे तेल निकालना हो, चाहे दूसरे देशों के तेल पर हमारी आंख हो या दूसरे कोई चीज. हम ये नहीं सोचते हैं कि आज हम जो कर रहे हैं उसका क्या प्रभाव, क्या असर पड़ेगा, आते हुए पुश्तों पर, आते हुए युगों पर । ये तीन मुख्य बातें हैं । हमारा गौरव है कि हम भारतवासी हैं । भारत एक देश है, कोई दूसरे देशों से, कोई ज्यादा अच्छा नहीं है । दूसरे देशों से ज्यादा सुन्दर नहीं है । क्या इसकी महानता रही है, क्या इसके गुण रहे हैं जिसने इसको सदियों में नहीं, हजारों साल से बचाया रखा है और हर कष्ट का सामना करने की हमारी गरीब जनता को क्षमता और ताकत दी है । वो है हमारी पुरानी परम्परा की..

जो ऊँचे आदर्श थे । भारत के इन्सान होते हुए, व्यक्तिगत रूप से चाहे हजारों गलतियां की हों, लेकिन हमेशा हमारी आँख एक ऊँचे ध्येय पर रही है और वो केवल भारत की एकता नहीं,लेकिन तमाम जितने प्रश्न हैं उनको हमने एक बहुत, सारी मनुष्य जाति को देखते हुए उसमें हम, उसके ढांचे में हमलोग उसको देखते हैं । भारत की परम्परा रही है शान्ति की, एक-दूसरे की विचारधारा को बर्दाश्त करने की, सब लोगों को संग मिल के चलने की और केवल मनुष्य को नहीं, जानवरों को, पौधों को, ये रही है हमारी परम्परा । चाहे आप गौतम बुद्ध की शिक्षा को देखें, चाहे आप सिखों के बड़े गुरुओं की शिक्षा को देखें, चाहे आप सम्राट अशोक ने जिस प्रकार से अपना संदेश सारे देश में फैलाया या अकबर बादशाह ने जिस तरह से हर धर्म के लोगों को अपने दरबार में लिया और उनके विचारों से लाभ उठाया, इस देश को मजबूती दी, चाहे फिर आज श्री अरविन्दो की वर्ष-गांठ भी है । कहीं दुनिया में होता है कि एक बड़ा क्रान्तिकारी, जो एक समय हिंसा में मानता था, वो आधुनिक हो, वो विचार रखते हुए, आजादी का प्रेम रखते हुए, आध्यात्मिकता की तरफ भी मुड़े और देश को मनोबल कैसे ऊपर करें, देश की अंदरूनी शक्ति है उसको कैसे बढ़ाये, उसके तरफ भी ध्यान दे और फिर गांधी जी जिन्होंने वो मूल्य जो सब धर्मों में पाये जाते हैं - भाईचारे के, शान्ति और मैत्री भावना के, उनको आज, और अहिंसा के - उनको आजादी की लड़ाई के औजार बनाया । हम आजादी के लिए लड़ रहे थे । हमारे पास बंदूक और तोप नहीं थी । हमारे औजार थे, हमारी एकता, हमारा देश-प्रेम और हमारा अपने ध्येय की तरफ लगन और निष्ठा । वो औजार क्या हमने खो दिये हैं । क्या आज वो देश-प्रेम नहीं है ? क्या आज हम तैयार नहीं हैं वो कुर्बानी देने को ।

आजकल, बहुत से बच्चे मेरे सामने बैठे हैं । बहुत से बच्चे, बहुत से नौजवान मेरी आवाज सुन रहे होंगे, उनसे मेरी पुकार है । लेकिन आप सब जो बड़ी उम्र के भी हैं, कुछ को पुराने दिन याद हैं और कुछ ने शायद नहीं देखें । लेकिन हमको एक सूत्र में बंधना है - देशप्रेम के लिए, देश की शक्ति के लिए । जो प्रान्तीयता बढ़ रही है, जो राजनैतिक लाभ के लिए लोग धर्म का नाम लेते हैं या समाज का नाम लेते हैं या भाषा का नाम लेते हैं या जाति का नाम लेते हैं वो देश की भलाई नहीं चाहते हैं । कुछ लोग हैं जो वो समझते हैं कि केवल तोड़-फोड़ से ही कोई आगे बढ़ सकता है क्योंकि उससे शायद नाम समाचार-पत्र में आ जाता है, कुछ धूम-धाम हो जाती है लेकिन हमको धूमधाम चाहिये या हमको अपने देश को मजबूत बनाना है ।

....6/-

हमको अपना नाम अखबार में लाना है या हमको अपने देश को चमकाना है। ये आज आप सबको पूछना है और मुझे विश्वास है कि जैसे बच्चों ने और बड़ों ने आजादी की लड़ाई में और जब भी हमारे ऊपर हमला हुआ है उसका मजबूती से सामना किया है। आज वही शक्ति उनके भीतर है। आज जो भारत के प्राचीन मूल्य हैं उनको हमको मजबूत बनाना है। हम भारतीय नागरिक हैं और हममें से किसी को कभी न वो काम करना है. कभी न वो शब्द बोलने हैं. न कभी वो विचार भी करना नहीं है जिससे भारतमाता का सिर झुक सकता है। हमारे ऊपर एक जबरदस्त जिम्मेदारी है। अपने लिए नहीं. लेकिन आते हुए लोगों के लिए। भारत कोई पांच साल. दस साल. सौ साल जीने का देश नहीं है. हजारों साल जीवित रहा है और हजारों साल और इसको जीवित रहना है। इसके लिए आज हमको अगर तत्काल में त्याग करना है. भविष्य के लिए. उस त्याग के लिए. उस सेवा के लिए. मैं आपको पुकार देती हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि इसमें हम और आप. कुछ भी हमारी विचारधारा हो. राजनीतिक मतभेद हों या दूसरे मतभेद हों. एक हो के हम भारत के सैनिक बनें। हम वर्दी नहीं पहनते हैं. जो वर्दी पहनते हैं उनका हम आदर करते हैं और उन पर हमारा गौरव है. लेकिन हम उनसे कम सैनिक सिपाही नहीं हैं इस भारत को आगे बढ़ाने की लड़ाई में। तो फिर से मेरी यही प्रार्थना है कि हम एक हों. हम मजबूत हों. हम जिन्दा दिल से और हंसते हुए. खुशी से कष्ट को सहते हुए हम आगे बढ़ें। इस सुन्दर देश को और सुन्दर बनायें। इसको साफ करें। जो भी इसमें गंदगी है. चाहे सड़क की गंदगी हो. घर की गंदगी हो. दिल के अंदर गंदगी हो. हरेक को जिम्मेदारी स्वयं लेनी है। हमारी आदत हो गयी है कि दूसरे को दोष दें। दूसरा गलत काम कर रहा है। हरेक अपने दिल से पूछे कि क्या हम ठीक काम कर रहे हैं कि नहीं। क्या हम उस गलत काम को रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगाने के लिए तैयार हैं कि नहीं? छोटा सा छोटा आदमी हो. बड़ा सा बड़ा आदमी हो. ये हमें सोचना है। और ये सोचेंगे और हरेक अपने में परिवर्तन ला सकेगा तो फिर क्या समाज में परिवर्तन नहीं आयेगा? क्या देश में परिवर्तन नहीं आयेगा? ये है एक प्रश्न जो आपको अपने हृदय से पूछना है।

तो फिर से आप सबको ये दिन मुबारक हो (तालियां) [और] उसकी खुशी में आप तैयार रहें. हर कष्ट. हर भय का सामना करने को और अपनी पूरी ताकत लगाने को. इस भारत की एकता को मजबूत करने को. इस भारत को दुनिया में चमकाने के लिए। मैं आपको धन्यवाद देती हूं और सबको अपनी शुभकामनायें देती हूं (तालियां)

अब मैं चाहती हूं कि मैं तीन दफे जयहिन्द बोलूंगी । अभी नहीं, जब बच्चे खड़े हो जायेंगे तो मैं बोलूंगी और मेरे बाद बच्चे, बूढ़े, नौजवान, सब लोग मिल के आप साथ बोलियेगा । ये है भारत की आजादी का नारा, भारत का झंडा ऊंचा रहे उसका नारा । जयहिन्द, जयहिन्द, जयहिन्द ।